



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

राठौड़ शासकों की प्रारंभिक राजधानी और उनकी समस्याएँ

राम चन्द्र

श्री मोती मेमोरियल महाविद्यालय, भावी।

शोध सारांश :- राठौड़ वंश भारतीय इतिहास में वीरता, स्वाभिमान और राजनीतिक कौशल के लिए प्रसिद्ध रहा है। कहा जाता है कि राठौड़ों की उत्पत्ति कन्नौज से हुई थी, जहाँ से तुर्क आक्रमणों और आंतरिक संघर्षों के कारण उन्हें पलायन करना पड़ा। राजस्थान आने के बाद राठौड़ों ने सबसे पहले पाली को अपनी प्रारंभिक राजधानी बनाया। पाली का चयन भौगोलिक दृष्टि से उचित था क्योंकि यह व्यापारिक मार्गों के समीप स्थित था और प्रशासनिक दृष्टि से एक केंद्र बिंदु बन सकता था। हालांकि, पाली में स्थायी रूप से शासन करना आसान नहीं था। लगातार बाहरी आक्रमणों, खासकर तुर्क और दिल्ली सल्तनत के हमलों ने राठौड़ शासकों को कई समस्याओं से जूझने पर विवश कर दिया। साथ ही, स्थानीय जागीरदारों और जनजातीय समूहों के विद्रोह ने भी शासन को कमजोर किया। पाली में सीमित संसाधन, खाद्यान्न संकट और आर्थिक अस्थिरता शासन के लिए मुख्य चुनौतियाँ थीं। इन परिस्थितियों को देखते हुए राठौड़ों ने अपनी राजधानी को मंडोर स्थानांतरित किया। मंडोर पहाड़ियों से घिरा होने के कारण सुरक्षा दृष्टि से अधिक अनुकूल था। परंतु, यहाँ भी समस्याएँ कम नहीं थीं। बार-बार के आक्रमण, आर्थिक कष्ट और आंतरिक कलह ने मंडोर को भी अस्थिर रखा। जनता में असंतोष और जागीरदारों की अलगाववादी प्रवृत्तियों ने शासन को कमजोर किया।

इन सभी समस्याओं के समाधान के लिए राव जोधा ने 1459 ई. में जोधपुर (मेहरानगढ़) की स्थापना की। मजबूत किलेबंदी, विस्तृत भंडारण व्यवस्था और सुरक्षित जल स्रोतों के कारण जोधपुर ने राठौड़ साम्राज्य की स्थायित्व की नींव रखी। इस प्रकार, प्रारंभिक राजधानी के बार-बार परिवर्तन और उससे जुड़ी समस्याएँ राठौड़ शासन के राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक दृष्टिकोण को गहराई से प्रभावित करती रहीं। यह शोध सारांश राठौड़ वंश के इतिहास में प्रारंभिक राजधानी के महत्व और उससे जुड़ी चुनौतियों का समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

संकेताक्षर :- राठौड़ वंश का उद्भव, राजस्थान में आगमन और प्रारंभिक सत्ता स्थापना, प्रारंभिक काल में सत्ता स्थापित करने की प्रक्रिया, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास, मारवाड़ के राठौड़ राजवंश की प्रारंभिक राजधानी मंडोर की समस्याएँ, नए राजधानी स्थल की आवश्यकता।

प्रस्तावना :- भारतीय इतिहास में राजपूत शासकों का गौरवशाली स्थान रहा है, जिनमें राठौड़ वंश विशेष रूप से वीरता, स्वाभिमान और अदम्य साहस के लिए प्रसिद्ध रहा है। राठौड़ शासकों का उद्भव कन्नौज से माना जाता है, जहाँ से तुर्क आक्रमणों और आंतरिक राजनीतिक अस्थिरता के कारण इन्हें पलायन करना पड़ा। इनकी संघर्षपूर्ण यात्रा ने राजस्थान के पश्चिमी भाग, विशेषकर मारवाड़ क्षेत्र में एक नई पहचान बनाई। राठौड़ों ने सर्वप्रथम पाली को अपनी राजधानी के रूप में चुना। पाली का चयन व्यापारिक, भौगोलिक एवं सामरिक दृष्टि से उपयुक्त था। यहाँ से राठौड़ों ने अपने शासन की नींव रखी और क्षेत्र में राजनीतिक एकता स्थापित करने का प्रयास किया। परंतु, सीमित संसाधन, खाद्यान्न संकट और लगातार बाहरी आक्रमणों ने पाली को असुरक्षित बना दिया। इन समस्याओं से बचने के लिए राठौड़ शासकों ने राजधानी को मंडोर स्थानांतरित किया।

मंडोर, अपनी प्राकृतिक संरचना और पहाड़ी सुरक्षा के कारण अधिक सुरक्षित माना गया। यहाँ से राठौड़ शासकों ने अपने शासन को विस्तार देने और राजनीतिक स्थायित्व प्राप्त करने का प्रयास किया। लेकिन मंडोर में भी राजनीतिक अस्थिरता, जागीरदारों की विद्रोही प्रवृत्ति, आर्थिक कष्ट तथा सीमाओं की रक्षा में कठिनाइयाँ बनी रहीं। इसके अलावा, लगातार तुर्क और दिल्ली सल्तनत के आक्रमणों ने मंडोर को भी अस्थिर रखा। इन चुनौतियों को भाँपते हुए राठौड़ शासक राव जोधा ने 1459 ई. में जोधपुर (मेहरानगढ़) की स्थापना की, जो रणनीतिक दृष्टि से अत्यंत सुरक्षित और मजबूत थी। इस नई राजधानी ने राठौड़ वंश को स्थायित्व, शक्ति और समृद्धि प्रदान की। यह शोध पत्र राठौड़ शासकों की प्रारंभिक राजधानियों के चयन, स्थानांतरण के पीछे के कारणों तथा इनसे जुड़ी राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक समस्याओं का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इस अध्ययन से न केवल राठौड़ वंश की संघर्षगाथा उजागर होती है, बल्कि राजस्थान के सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य की भी गहन समझ मिलती है।

राठौड़ वंश का उद्भव, राजस्थान में आगमन और प्रारंभिक सत्ता स्थापना

भारतीय इतिहास में राठौड़ वंश का नाम वीरता, स्वाभिमान और अदम्य साहस के प्रतीक के रूप में जाना जाता है। राठौड़ों की उत्पत्ति को लेकर कई कथाएँ और लोकविश्वास प्रचलित हैं। इतिहासकारों और लोक परंपराओं के अनुसार, राठौड़ वंश का उद्भव कन्नौज के गहड़वाल राजवंश से माना जाता है। कन्नौज का राजा जयचंद गहड़वाल राठौड़ों का प्रमुख पूर्वज माना जाता है।



12वीं शताब्दी के अंत में, जब मुहम्मद गौरी ने 1194 ई. में कन्नौज पर आक्रमण किया, तब जयचंद की हार के बाद वहाँ का सामाजिक और राजनीतिक ढाँचा पूरी तरह बिखर गया। इस आक्रमण के कारण गहड़वाल वंश के शेष सदस्य और उनके अनुयायी अपनी रक्षा के लिए उत्तर भारत के विभिन्न हिस्सों में फैल गए। इन्हीं में से एक शाखा ने राजस्थान का रुख किया और वही आगे चलकर राठौड़ वंश के रूप में प्रसिद्ध हुई।

राजस्थान में प्रवेश के दौरान, राठौड़ों ने कई कठिनाइयों का सामना किया। मार्ग में स्थानीय जनजातियाँ, जैसे भील, मीणा और गुर्जर आदि ने उनका विरोध किया। फिर भी, राठौड़ अपनी संगठन शक्ति और युद्धकौशल के आधार पर धीरे-धीरे आगे बढ़ते रहे। राजस्थान में उनके आगमन ने क्षेत्र की राजनीतिक परिस्थितियों को नया मोड़ दिया और मारवाड़ के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

राठौड़ों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और समाज में योगदान :- राठौड़ वंश ने राजस्थान में न केवल राजनीतिक सत्ता स्थापित की, बल्कि समाज और संस्कृति के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन्होंने क्षेत्रीय सुरक्षा, न्याय व्यवस्था, सांस्कृतिक संरक्षण और स्थापत्य कला के विकास में अग्रणी भूमिका निभाई। मारवाड़ क्षेत्र में राठौड़ों ने कृषि, पशुपालन और व्यापार को भी बढ़ावा दिया। इसके अलावा, मंदिर निर्माण, तालाब और बावड़ियों का निर्माण, और जनकल्याण कार्यों में भी राठौड़ों ने उल्लेखनीय योगदान दिया। राठौड़ों ने राजपूताना की गौरवमयी परंपराओं को आगे बढ़ाया और वीरता, साहस, तथा

स्वाभिमान के आदर्शों को समाज में स्थापित किया। राजस्थान के लोकगीतों, लोककथाओं और साहित्य में राठौड़ शासकों की वीर गाथाएँ व्यापक रूप से समाहित हैं।

राठौड़ वंश के प्रमुख पूर्वज

राठौड़ वंश के विस्तार और स्थापना में कई प्रमुख पूर्वजों का योगदान रहा।

सीहा (सीयाजी):— सीहा को कन्नौज से निकलने के बाद राठौड़ कुल का पहला नेतृत्वकर्ता माना जाता है। उसने अपने अनुयायियों को संगठित कर सुरक्षित ठिकानों की खोज में राजस्थान की ओर बढ़ना प्रारंभ किया।

सेट्रमल :— सीहा के पुत्र सेट्रमल ने प्रवास को आगे बढ़ाया और युद्धनीति में दक्षता दिखाते हुए कई छोटे-छोटे गढ़ों पर अधिकार किया।

कांधल :— कांधल ने मारवाड़ में राठौड़ शक्ति को संगठित करने में विशेष भूमिका निभाई। उसने भील और अन्य स्थानीय सरदारों को पराजित कर राठौड़ वर्चस्व की नींव रखी। इन प्रमुख पूर्वजों के साहस और संगठन कौशल ने राठौड़ों को मारवाड़ में टिकने और शासन स्थापित करने में मदद की।

कन्नौज से मारवाड़ की ओर प्रवास :— कन्नौज से निकलने के बाद राठौड़ों ने गुजरात, मेवाड़ होते हुए धीरे-धीरे मारवाड़ (वर्तमान जोधपुर क्षेत्र) की ओर प्रस्थान किया। यह प्रवास केवल भौगोलिक बदलाव नहीं था, बल्कि एक महान सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवर्तन भी था। रास्ते में राठौड़ों ने कई स्थानों पर अस्थायी ठिकाने बनाए, परंतु बाहरी आक्रमण और स्थानीय विरोध के चलते स्थायी निवास असंभव हो गया। मारवाड़ की भूमि ने उन्हें स्थायी बसेरा दिया। यहाँ की भौगोलिक स्थिति, रेगिस्तानी विस्तार और पहाड़ी किलेबंदियाँ उनके लिए रणनीतिक दृष्टि से अनुकूल साबित हुईं।



प्रारंभिक काल में सत्ता स्थापित करने की प्रक्रिया

मारवाड़ पहुँचने के बाद राठौड़ों ने धीरे-धीरे अपनी शक्ति का विस्तार शुरू किया। सबसे पहले उन्होंने पाली को राजधानी बनाया। पाली व्यापारिक दृष्टि से समृद्ध और सामरिक दृष्टि से सुरक्षित था। यहाँ से राठौड़ों ने अपने आसपास के क्षेत्रों पर नियंत्रण स्थापित करना शुरू किया। पाली में अपनी सत्ता को मजबूत करने के लिए राठौड़ों ने स्थानीय समाज को संगठित किया। कृषि, व्यापार और प्रशासन में सुधार कर जनता का समर्थन प्राप्त किया। सैन्य संगठन को सुदृढ़ करने के लिए छोटे-छोटे दल बनाए गए, जो आसपास के इलाकों में सुरक्षा और कर संग्रह का कार्य करते थे। धीरे-धीरे राठौड़ों ने मंडोर पर भी अधिकार कर लिया। मंडोर पहाड़ी क्षेत्र में स्थित होने के कारण किलेबंदी के लिए आदर्श था। मंडोर से राठौड़ों ने पूरे मारवाड़ में अपना प्रभाव बढ़ाना शुरू किया। इस प्रक्रिया में उन्होंने स्थानीय क्षत्रिय सरदारों, भील और मीणा जैसे जनजातीय समूहों से लगातार संघर्ष किए। राठौड़ों ने राजनीतिक स्थिरता लाने के लिए वैवाहिक संधियों और सामाजिक गठबंधनों का भी सहारा लिया। उन्होंने व्यापार मार्गों को नियंत्रित कर आर्थिक समृद्धि सुनिश्चित की और राजकोष को सुदृढ़ बनाया।

सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव

राठौड़ों ने न केवल सत्ता स्थापित की, बल्कि क्षेत्र की संस्कृति और समाज को भी नया जीवन दिया। इन्होंने किले, मंदिर और अन्य स्थापत्य स्मारकों का निर्माण कर सांस्कृतिक धरोहर को बढ़ावा दिया। मारवाड़ की लोककला, संगीत, चित्रकला और स्थापत्य शैली में राठौड़ प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। राठौड़ शासकों ने समाज में शौर्य, दानशीलता

और न्याय की भावना को प्रोत्साहित किया। स्थानीय राजपूत और अन्य जातियों के बीच संतुलन बनाकर उन्होंने सामाजिक एकता को मजबूत किया।

इस प्रकार, कन्नौज के गहड़वाल वंश से उत्पन्न राठौड़ों ने राजस्थान में एक लंबा संघर्षपूर्ण सफर तय किया। सीहा, सेट्रमल और कांधल जैसे वीर पूर्वजों के नेतृत्व में उन्होंने न केवल मारवाड़ में सत्ता स्थापित की, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक विकास की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। पाली और मंडोर जैसे नगरों को अपनी प्रारंभिक राजधानियों के रूप में विकसित कर राठौड़ों ने भविष्य में जोधपुर जैसे महान शहर की नींव रखी। राठौड़ों की यह संघर्षगाथा न केवल एक वंश की कहानी है, बल्कि शौर्य, पराक्रम और सांस्कृतिक धरोहर की अद्वितीय मिसाल भी है।

पाली से मंडोर की ओर राजधानी स्थानांतरण

पाली राठौड़ वंश की प्रारंभिक राजधानी :- राठौड़ वंश ने जब कन्नौज से राजस्थान की ओर प्रवास किया, तब उन्हें एक ऐसे स्थान की तलाश थी जो सामरिक दृष्टि से सुरक्षित, आर्थिक दृष्टि से समृद्ध और प्रशासनिक दृष्टि से सुलभ हो। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए राठौड़ों ने सबसे पहले पाली को अपनी राजधानी के रूप में चुना। पाली का भौगोलिक महत्व अत्यधिक था। यह स्थान अरावली पर्वतमाला के निकट स्थित था, जिससे इसे प्राकृतिक सुरक्षा मिलती थी। पाली पुराने समय से ही एक प्रसिद्ध व्यापारिक केंद्र रहा है। यहाँ से गुजरने वाला व्यापार मार्ग गुजरात, मालवा और उत्तरी भारत को जोड़ता था। इस मार्ग पर अधिकार कर राठौड़ों ने आर्थिक दृष्टि से स्वयं को सुदृढ़ किया। पाली में राठौड़ों ने प्रशासनिक ढांचा विकसित किया। गाँवों और शहरों में चौधरी, पटेल और अन्य स्थानीय अधिकारियों की नियुक्ति की गई। कर संग्रह, न्याय व्यवस्था और सुरक्षा से संबंधित व्यवस्थाएँ सुनियोजित की गईं। पाली के आस-पास के क्षेत्रों में सैन्य ठिकाने बनाए गए, जहाँ से सैनिकों को तैनात कर बाहरी हमलों और आंतरिक विद्रोहों पर नियंत्रण रखा जाता था। सैन्य संगठन में हल्की और भारी दोनों प्रकार की टुकड़ियाँ रखी जाती थीं। घुड़सवार सैनिक, पैदल सेना और धनुष-बाणधारी दस्ते मुख्य आधार थे। युद्ध नीति में चालाकी, गुप्तचर व्यवस्था और गोरिल्ला युद्ध शैली को भी अपनाया गया। इसके अलावा, किलों और चौकियों का जाल बिछाकर शत्रुओं की गतिविधियों पर निगरानी रखी जाती थी।

पाली से मंडोर की ओर राजधानी का स्थानांतरण :- हालांकि पाली सामरिक और आर्थिक दृष्टि से मजबूत था, परंतु यह बाहरी आक्रमणों के लिए अपेक्षाकृत खुला और असुरक्षित था। दिल्ली सल्तनत और तुर्क आक्रमणकारियों के बढ़ते हमलों ने पाली की सुरक्षा व्यवस्था को कमजोर कर दिया। पाली के मैदानों में खुली स्थिति और सीमित किलेबंदी ने इसे आक्रमणों के लिए आसान लक्ष्य बना दिया। राठौड़ शासकों ने इन समस्याओं को देखते हुए एक अधिक सुरक्षित और रणनीतिक दृष्टि से मजबूत राजधानी की आवश्यकता अनुभव की। इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए उन्होंने मंडोर को अपनी नई राजधानी के रूप में चुना।

- मंडोर का चुनाव
- मंडोर का चुनाव कई कारणों से उपयुक्त रहा।
- मंडोर पहाड़ियों से घिरा हुआ था, जिससे प्राकृतिक सुरक्षा मिलती थी।
- यहाँ किलेबंदी की संभावनाएँ अधिक थीं।
- मंडोर का ऐतिहासिक महत्व भी था, क्योंकि यह प्राचीन काल में भी स्थानीय शासकों का प्रमुख केन्द्र रहा था।
- मंडोर के चारों ओर उपजाऊ भूमि और जल स्रोत उपलब्ध थे, जिससे खाद्यान्न और पानी की समस्या का समाधान हुआ।
- मंडोर में राठौड़ों ने अपनी राजधानी स्थानांतरित कर शासन को सुदृढ़ करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया।

मंडोर में स्थापत्य और किलेबंदी

मंडोर पहुँचने के बाद राठौड़ों ने सबसे पहले यहाँ की किलेबंदी पर ध्यान दिया। पत्थर और चूने के गारे से मजबूत दीवारें बनाई गईं। मंडोर में प्रवेश के मुख्य द्वार को मजबूत किया गया और गुप्त सुरंगें तैयार की गईं, जिससे आपातकाल में राजा और परिवार को सुरक्षित निकाला जा सके। मंडोर के अंदर राजमहल, सैनिक आवास, अस्तबल, शस्त्रागार और जल भंडारण के लिए विशेष स्थान बनाए गए। वास्तुकला में राजस्थानी शैली के साथ-साथ कन्नौजी प्रभाव भी देखा जाता है। मंडोर की छतरियाँ, मंदिर और स्मारक उस काल की स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

प्रशासनिक संगठन का विकास

मंडोर में राजधानी स्थापित करने के बाद, राठौड़ों ने प्रशासनिक संगठन को और भी अधिक व्यवस्थित किया।

राजकोष— मंडोर में स्थायी कोषागार स्थापित किया गया। कर संग्रह, व्यापार कर, और कृषि से प्राप्त राजस्व को यहाँ सुरक्षित रखा जाता था।

न्याय व्यवस्था— मंडोर में राजदरबार स्थापित किया गया जहाँ राजा स्वयं न्याय करता था। विवादों का निपटारा निष्पक्षता से किया जाता था, जिससे प्रजा में विश्वास बढ़ा।

सेनापति और प्रहरी— सेना का नेतृत्व करने के लिए सेनापति की नियुक्ति की गई। सीमा की सुरक्षा और आंतरिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए प्रहरी नियुक्त किए गए।

व्यापार और कर व्यवस्था— मंडोर के पास स्थित व्यापार मार्गों पर कर चौकियाँ बनाई गईं। व्यापारियों से कर वसूल कर राज्य की आय को बढ़ाया गया।

सामाजिक और सांस्कृतिक विकास

मंडोर केवल एक राजनीतिक और सैन्य केंद्र ही नहीं था, बल्कि सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टि से भी समृद्ध बना। यहाँ कई मंदिरों, छतरियों और स्मारकों का निर्माण किया गया। राठौड़ शासकों ने ब्राह्मणों, कारीगरों और शिल्पकारों को प्रोत्साहित किया। यहाँ के मेले, उत्सव और धार्मिक आयोजन समाज में एकता और सांस्कृतिक जीवन्तता को बनाए रखते थे। मंडोर में राठौड़ों ने प्रजा के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित किए और राज्य की सुरक्षा एवं समृद्धि को प्राथमिकता दी।

राजनीतिक स्थायित्व और चुनौती :- मंडोर में शासन स्थापित करने के बाद भी चुनौतियाँ समाप्त नहीं हुईं। तुर्क आक्रमण और दिल्ली सल्तनत की नजरें मंडोर पर भी बनी रहीं। इसके बावजूद, मंडोर की किलेबंदी और पहाड़ी संरचना ने कई आक्रमणों को विफल कर दिया। राठौड़ शासकों ने मंडोर में जागीरदारी प्रथा को और अधिक सुदृढ़ किया। स्थानीय सरदारों को जागीरें देकर उनका समर्थन प्राप्त किया गया, जिससे राजनीतिक स्थायित्व मजबूत हुआ।

मंडोर से जोधपुर की ओर बढ़ते कदम

हालांकि मंडोर ने राठौड़ों को अपेक्षित सुरक्षा दी, परंतु समय के साथ इसकी सीमाएँ भी उजागर होने लगीं। पानी की कमी, बढ़ती जनसंख्या, और बाहरी आक्रमणों के प्रति चुनौतियों ने एक और नई राजधानी की आवश्यकता उत्पन्न की। यही कारण था कि बाद में राव जोधा ने 1459 ई. में जोधपुर (मेहरानगढ़) किले की स्थापना कर एक स्थायी और मजबूत राजधानी की नींव रखी।

पाली से मंडोर की ओर राजधानी का स्थानांतरण राठौड़ वंश के इतिहास में एक महत्वपूर्ण राजनीतिक निर्णय था। पाली ने राठौड़ों को शासन की शुरुआती नींव दी, जबकि मंडोर ने उन्हें राजनीतिक स्थायित्व, सुरक्षा और सांस्कृतिक उत्थान प्रदान किया। मंडोर के स्थापत्य, प्रशासनिक सुधार और सामाजिक-सांस्कृतिक विकास ने राठौड़ शासन को मजबूत आधार दिया। यह स्थानांतरण न केवल सैन्य दृष्टि से महत्वपूर्ण था, बल्कि इसके माध्यम से राठौड़ों ने मारवाड़ की सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान को नई ऊँचाई दी।

मारवाड़ के राठौड़ राजवंश की प्रारंभिक राजधानी मंडोर की समस्याएँ

मंडोर की स्थापना और प्रारंभिक सफलता :- पाली से मंडोर की ओर राजधानी स्थानांतरित करना राठौड़ वंश का एक दूरदर्शी कदम था। मंडोर अपनी पहाड़ी संरचना और प्राकृतिक सुरक्षा के कारण पाली की अपेक्षा अधिक सुरक्षित और सामरिक दृष्टि से उत्तम था। राठौड़ शासकों ने यहाँ किलेबंदी, प्रशासनिक ढाँचे और सांस्कृतिक विकास के लिए अनेक प्रयास किए। लेकिन मंडोर में शासन स्थापित करने के बाद भी कई गहरी समस्याएँ धीरे-धीरे सामने आने लगीं, जिनमें राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक चुनौतियाँ प्रमुख थीं।

राजनीतिक समस्याएँ

लगातार तुर्क और दिल्ली सल्तनत के आक्रमण :-मंडोर की भौगोलिक स्थिति और रणनीतिक महत्त्व के कारण यह लगातार बाहरी आक्रमणों का केंद्र बना रहा। दिल्ली सल्तनत और तुर्क शासक मारवाड़ के राजाओं की शक्ति को चुनौती मानते थे। मंडोर के समीपवर्ती क्षेत्र में व्यापारिक मार्गों और स्थानीय जागीरों पर कब्जा करने की मंशा से तुर्क आक्रमण बार-बार होते रहे। इससे राज्य की सुरक्षा व्यवस्था पर भारी दबाव पड़ा और राजकोष पर भी बोझ बढ़ा।

भीतरी आपसी संघर्ष और जागीरदारों की विद्रोही प्रवृत्ति :- मंडोर में शासन स्थापित करने के बाद, राठौड़ों ने अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए विभिन्न स्थानीय सरदारों और ठाकुरों को जागीरें प्रदान कीं। परंतु, समय के साथ ये जागीरदार स्वायत्तता की ओर अग्रसर होने लगे। कई बार जागीरदारों ने कर देने से इंकार कर दिया और केंद्र शासन के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। इससे प्रशासनिक एकता कमजोर हुई और बार-बार आंतरिक संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हुई।

सीमित संसाधन और खाद्यान्न संकट :- मंडोर के चारों ओर मरुस्थलीय क्षेत्र होने के कारण यहाँ कृषि योग्य भूमि सीमित थी। वर्षा की अनिश्चितता और सिंचाई साधनों की कमी के कारण खाद्यान्न संकट उत्पन्न होना आम बात थी। बार-बार के अकाल और सूखे ने इस समस्या को और गहरा कर दिया। इससे न केवल प्रजा को कठिनाइयाँ हुई, बल्कि सैनिकों और प्रशासन को भी भोजन व राशन की कमी का सामना करना पड़ा।

राजनीतिक अस्थिरता :- बाहरी आक्रमण, भीतरी विद्रोह, और संसाधन संकट ने मंडोर में राजनीतिक अस्थिरता को जन्म दिया। कई बार राजाओं को अपने ही जागीरदारों के विरुद्ध अभियान चलाने पड़े। इससे राज्य की ऊर्जा और धन दोनों का व्यय होता रहा, जिससे दीर्घकालिक स्थायित्व का सपना अधूरा रह गया।

आर्थिक समस्याएँ :-

कृषि पर आधारित अर्थव्यवस्था का कमजोर होना - मंडोर की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित थी। परंतु, यहाँ की भू-जल परिस्थितियाँ, मरुस्थलीय जलवायु और सीमित सिंचाई व्यवस्था ने कृषि उत्पादन को निरंतर प्रभावित किया। अनियमित वर्षा और बार-बार के सूखे ने खेती को अस्थिर बना दिया, जिससे किसानों की आय घटी और राज्य की कर आय भी कम हो गई।

व्यापार मार्गों पर हमलों के कारण व्यापार में गिरावट - मंडोर व्यापारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान पर स्थित था, परंतु लगातार आक्रमणों और लूट-पाट के कारण व्यापार मार्ग असुरक्षित हो गए। व्यापारियों में असुरक्षा की भावना उत्पन्न हुई और उन्होंने मंडोर छोटे हुए व्यापार करना कम कर दिया। इससे राज्य को व्यापार कर से होने वाली आय में भारी गिरावट आई।

राजकोष की कमी और सैनिकों को वेतन देने में कठिनाई :- कमजोर कृषि और व्यापार की वजह से राजकोष पर संकट आ गया। सैनिकों को नियमित वेतन देना, किलों के रखरखाव और प्रशासनिक खर्च पूरे करना कठिन हो गया। कई बार सैनिकों के असंतोष और वेतन न मिलने के कारण विद्रोह की स्थिति उत्पन्न हुई। राजकोष की कमी ने मंडोर की प्रशासनिक व्यवस्था को कमजोर कर दिया और राज्य की रक्षा क्षमता को भी प्रभावित किया।

सामाजिक समस्याएँ

जातीय और जनजातीय संघर्ष :- मंडोर और उसके आस-पास के क्षेत्रों में विभिन्न जातीय समूह और जनजातियाँ रहती थीं, जैसे भील, मीणा, और अन्य स्थानीय कबीले। राठौड़ों के आगमन और शासन विस्तार ने इन समूहों में असंतोष पैदा किया। स्थानीय जनजातियाँ अपनी स्वतंत्रता और परंपरागत अधिकारों की रक्षा के लिए लगातार संघर्ष करती रहीं। इससे सामाजिक स्थिरता में व्यवधान उत्पन्न होता रहा।

स्थानीय राजाओं और सरदारों का विरोध :- मंडोर के आसपास पहले से ही कई छोटे-छोटे स्वतंत्र या अर्ध-स्वतंत्र राजाओं और सरदारों का वर्चस्व था। राठौड़ों के विस्तारवादी दृष्टिकोण और राजनीतिक वर्चस्व को स्वीकार करना उनके लिए कठिन था। कई बार उन्होंने खुलकर विद्रोह किया, तो कभी गुप्त रूप से षड्यंत्र रचकर राज्य को अस्थिर करने का प्रयास किया। इससे मंडोर के शासन को लगातार चुनौतियाँ मिलती रहीं।

जनता के प्रति विश्वास और समर्थन प्राप्त करने की चुनौती :- मंडोर में खाद्यान्न संकट, करों में वृद्धि, और असुरक्षा के माहौल ने जनता के बीच असंतोष फैलाया। लगातार युद्धों और आंतरिक कलह ने जनता के जीवन को प्रभावित किया।

कई बार विद्रोहों और दंगों में जनता का भी समर्थन जागीरदारों और विरोधी सरदारों को मिलने लगा। ऐसे माहौल में प्रजा का भरोसा जीतना और प्रशासन को स्थिर बनाए रखना राठौड़ शासकों के लिए एक कठिन कार्य बन गया।

समस्याओं का व्यापक प्रभाव :- राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक समस्याओं ने मंडोर को एक अस्थिर राजधानी में बदल दिया। बार-बार के हमले, संसाधनों की कमी और भीतरी विद्रोहों ने शासन को कमजोर कर दिया। यह स्थिति राठौड़ शासकों को मजबूर कर रही थी कि वे मंडोर के स्थान पर किसी अधिक सुरक्षित और संगठित राजधानी की खोज करें। इसी कारण आगे चलकर राव जोधा ने 1459 ई. में जोधपुर (मेहरानगढ़) की स्थापना कर एक नए युग की शुरुआत की।

मंडोर की समस्याएँ केवल आंतरिक प्रशासनिक विफलता का परिणाम नहीं थीं, बल्कि उस समय के राजनीतिक और भूगोलिक परिदृश्य का भी असर थीं। सीमित संसाधन, बाहरी आक्रमण, आंतरिक संघर्ष, आर्थिक कमजोरी और सामाजिक विभाजन ने मंडोर की राजधानी के रूप में संभावनाओं को सीमित कर दिया। हालांकि मंडोर ने राठौड़ वंश के शासन को एक मजबूत आधार देने का कार्य किया, लेकिन अंततः ये समस्याएँ ही एक नई राजधानी कृ जोधपुर कृ की स्थापना का कारण बनीं।

मारवाड़ के राठौड़ राजवंश की प्रारंभिक राजधानी – सांस्कृतिक एवं धार्मिक पक्ष

धार्मिक अस्थिरता : मंदिरों पर आक्रमण :- राठौड़ राजवंश की प्रारंभिक राजधानी मंडोर धार्मिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध थी। यहाँ अनेक प्राचीन मंदिर, देवालय और सांस्कृतिक स्मारक स्थित थे। लेकिन बार-बार होने वाले तुर्क आक्रमणों और दिल्ली सल्तनत के हमलों ने इस धार्मिक व्यवस्था को गहरा आघात पहुँचाया। आक्रमणकारियों ने न केवल राजनीतिक सत्ता को कमजोर किया, बल्कि मंदिरों और धार्मिक स्थलों को भी ध्वस्त किया। मंदिरों में संग्रहित संपत्ति को लूट लिया गया, मूर्तियों को तोड़ा गया और पुजारियों को यातनाएँ दी गईं। इन घटनाओं ने न केवल धार्मिक व्यवस्था को संकट में डाला, बल्कि जनता के मनोबल को भी तोड़ दिया। मंदिर केवल पूजा स्थलों तक सीमित नहीं थे वे सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का केंद्र भी थे। यहाँ पर धार्मिक उत्सव, सांस्कृतिक कार्यक्रम और सामाजिक न्याय के निर्णय लिए जाते थे। मंदिरों पर आक्रमण से यह सब बाधित हो गया और धार्मिक अस्थिरता ने समाज में अव्यवस्था फैला दी।

जातीय और वर्गीय तालमेल की समस्या :- मंडोर में राठौड़ शासकों को एक विविध जातीय और वर्गीय समाज का सामना करना पड़ा। यहाँ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यों के अलावा भील, मीणा और अन्य जनजातियाँ भी निवास करती थीं। ब्राह्मणों और क्षत्रियों के बीच धार्मिक एवं सामाजिक वर्चस्व बनाए रखने की होड़ रहती थी। ब्राह्मण वर्ग मंदिरों के पुनर्निर्माण और धार्मिक अनुष्ठानों में लगा रहता था, जबकि क्षत्रिय वर्ग राज्य की सुरक्षा और युद्ध में व्यस्त था। अन्य जातियाँ और जनजातियाँ अपने-अपने परंपरागत अधिकारों और स्वतंत्रता को बनाए रखना चाहती थीं। इन सबके बीच सामंजस्य बनाए रखना शासकों के लिए एक बड़ी चुनौती थी। कर प्रणाली, श्रम व्यवस्था और सामाजिक रीति-रिवाजों में भिन्नता के कारण समाज में अक्सर असंतोष पनपता था। कभी-कभी यह असंतोष खुली बगावत का रूप भी ले लेता था।

सांस्कृतिक एकता बनाए रखने का प्रयास :- इन तमाम समस्याओं के बीच राठौड़ शासकों ने सांस्कृतिक एकता बनाए रखने के लिए कई प्रयास किए। उन्होंने मंदिरों के पुनर्निर्माण और धार्मिक आयोजनों को संरक्षण दिया। पाली और मंडोर में संगीत, नृत्य और लोककला के कार्यक्रमों को प्रोत्साहित कर जनता में सामूहिकता की भावना जगाई। त्योहारों और मेलों के माध्यम से सामाजिक बंधन मजबूत किए गए। ब्राह्मणों को धार्मिक अनुष्ठान, क्षत्रियों को सुरक्षा, और अन्य जातियों को व्यापार और कृषि में अवसर देकर सामाजिक संतुलन बनाए रखने का प्रयास किया गया।

नए राजधानी स्थल की आवश्यकता

सुरक्षा की दृष्टि से आवश्यक :- मंडोर में बार-बार के आक्रमणों और आंतरिक विद्रोहों ने राठौड़ शासकों को यह अहसास दिला दिया कि उन्हें एक नई, अधिक सुरक्षित और मजबूत राजधानी की आवश्यकता है। मंडोर भौगोलिक दृष्टि से बेहतर था, परंतु इसकी खुली स्थिति और सीमित किलेबंदी इसे पूरी तरह सुरक्षित नहीं बना सकी। मंडोर की पहाड़ी सुरक्षा सीमित थी और आसपास के जलस्रोत भी पर्याप्त नहीं थे। युद्ध की स्थिति में लंबे समय तक यहाँ टिके रहना कठिन था।

रणनीतिक और भौगोलिक कारण :- मारवाड़ की भौगोलिक परिस्थिति को देखते हुए राठौड़ शासकों ने ऐसी जगह खोजनी शुरू की जो सामरिक दृष्टि से सुदृढ़, जलस्रोतों के समीप, और ऊँचाई पर स्थित हो। इस खोज का परिणाम था कृ मेहरानगढ़, जहाँ बाद में जोधपुर की स्थापना हुई। मेहरानगढ़ पहाड़ी पर स्थित था, जो शत्रुओं के आक्रमण से बचाव के लिए आदर्श था। पहाड़ी की ऊँचाई से चारों ओर का विस्तृत दृश्य दिखता था, जिससे शत्रु की हरकतों पर नजर रखी जा सकती थी। साथ ही, यहाँ प्राकृतिक चट्टानों का उपयोग कर मजबूत किलेबंदी संभव थी।

जल और संसाधनों की उपलब्धता :- जोधपुर के आसपास पर्याप्त जल स्रोत थे। पहाड़ी के नीचे रणीसागर तालाब और अन्य जलाशयों के निर्माण से जल संकट का स्थायी समाधान मिला। कृषि और पशुपालन के लिए भी जल का प्रबंध हो गया, जिससे खाद्यान्न संकट कम करने में सहायता मिली।

राजनीतिक स्थायित्व और जागीर व्यवस्था का प्रबंधन :- नए स्थल पर राजधानी स्थापित करने से जागीरदारों और स्थानीय सरदारों पर नियंत्रण सुदृढ़ किया जा सकता था। मेहरानगढ़ की किलेबंदी और दुर्गम मार्गों ने विद्रोहियों और विरोधी सरदारों को नियंत्रित करने में मदद की। किले के भीतर सेना और प्रशासन के लिए विशेष परिसर बनाए गए, जिससे राज्य संचालन और सैनिक गतिविधियों में सुविधा हुई।

धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से सुदृढ़ आधार :- जोधपुर में आने के बाद राठौड़ शासकों ने धार्मिक और सांस्कृतिक संरक्षण को और अधिक सशक्त किया। किले के भीतर और आसपास मंदिरों का निर्माण करवाया गया। धार्मिक आयोजनों, पर्वों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों को बढ़ावा देकर जनता का विश्वास फिर से जीता गया। ब्राह्मणों, शिल्पकारों और व्यापारियों को विशेष प्रोत्साहन दिया गया, जिससे राज्य की सांस्कृतिक जीवंतता और आर्थिक समृद्धि दोनों को बल मिला।

राव जोधा और जोधपुर की स्थापना

राठौड़ वंश के सबसे प्रसिद्ध शासक राव जोधा ने 1459 ई. में मेहरानगढ़ किले की नींव रखी। उन्होंने मंडोर की समस्याओं का गहन अध्ययन कर एक स्थायी और सुरक्षित राजधानी की आवश्यकता को समझा। राव जोधा ने मेहरानगढ़ के निर्माण में स्थानीय कारीगरों और रणनीतिक विशेषज्ञों की मदद ली। मेहरानगढ़ की दीवारें अत्यंत ऊँची और मजबूत बनाई गईं। किले के भीतर महल, शस्त्रागार, मंदिर, जल भंडारण और आपातकालीन मार्ग जैसे सभी प्रबंध थे। किले की निर्माण शैली में राजस्थान की पारंपरिक वास्तुकला और कन्नौज की स्थापत्य कला का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है।

आर्थिक दृष्टि से नई राजधानी का महत्व :- जोधपुर का स्थल व्यापार मार्गों के नजदीक था, जिससे व्यापारिक गतिविधियाँ पुनः तेज हुईं। यहाँ से गुजरात, दिल्ली, सिंध और पश्चिमी भारत के अन्य भागों से व्यापार जुड़ गया। व्यापार से प्राप्त राजस्व ने राजकोष को समृद्ध किया और सैनिक व प्रशासनिक व्यय आसानी से पूरे किए जाने लगे।

मंडोर में उत्पन्न समस्याओं ने राठौड़ शासकों को एक नई राजधानी की खोज के लिए प्रेरित किया। सुरक्षा, संसाधन, राजनीतिक नियंत्रण और सांस्कृतिक उत्थान कृ इन सभी दृष्टियों से जोधपुर (मेहरानगढ़) की स्थापना एक ऐतिहासिक निर्णय था। राव जोधा के नेतृत्व में बनी यह नई राजधानी न केवल राजनीतिक दृष्टि से सुरक्षित थी, बल्कि सांस्कृतिक और धार्मिक समृद्धि का भी प्रतीक बनी। यहाँ से राठौड़ वंश ने न केवल मारवाड़ को स्थायित्व दिया, बल्कि समस्त राजस्थान में अपनी शक्ति और गौरव का विस्तार किया।

निष्कर्ष

राठौड़ वंश का इतिहास वीरता, संघर्ष और संगठन क्षमता का प्रतीक है। कन्नौज के गहड़वाल वंश से निकली इस शाखा ने जब राजस्थान की ओर प्रवास किया, तब उनके सामने अनेक चुनौतियाँ थीं। प्रारंभिक समय में राठौड़ों ने पाली को अपनी राजधानी बनाया। पाली, व्यापारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था और इसके द्वारा राठौड़ों ने अपनी सत्ता की नींव मजबूत की। यहाँ से उन्होंने प्रशासनिक संगठन, कर व्यवस्था और सैन्य शक्ति का विस्तार किया। लेकिन, पाली की भौगोलिक स्थिति खुले मैदान में होने के कारण इसे बाहरी आक्रमणों से बचाना कठिन था। इन कमजोरियों को देखते हुए राठौड़ शासकों ने मंडोर को नई राजधानी के रूप में चुना। मंडोर पहाड़ियों से घिरा था और सामरिक दृष्टि से अधिक सुरक्षित माना गया। यहाँ पर किलेबंदी, राजमहल, शस्त्रागार और जल संग्रहण की व्यवस्था विकसित की गई। इसके बावजूद मंडोर में भी समस्याएँ कम नहीं थीं। तुर्क और दिल्ली सल्तनत के निरंतर आक्रमणों ने मंडोर की सुरक्षा और स्थिरता को चुनौती दी।

भीतरी विद्रोह और जागीरदारों की विद्रोही प्रवृत्ति ने शासन को बार-बार कमजोर किया। सीमित कृषि भूमि और बार-बार पड़ने वाले अकाल ने खाद्यान्न संकट को जन्म दिया। व्यापार मार्गों पर हमलों के कारण व्यापारिक गतिविधियाँ बाधित हुईं, जिससे राजकोष में कमी आई और सैनिकों को वेतन देने में कठिनाई हुई। सामाजिक दृष्टि से भी मंडोर में चुनौतियाँ कम नहीं थीं। ब्राह्मण, क्षत्रिय और अन्य जातियों व जनजातियों के बीच संतुलन बनाए रखना कठिन था। मंदिरों पर आक्रमण, धार्मिक अस्थिरता और जनता में असंतोष ने शासन को भीतर से कमजोर कर दिया। सांस्कृतिक एकता बनाए रखने के लिए शासकों ने त्योहारों, मंदिरों के पुनर्निर्माण और सामाजिक मेलों का सहारा लिया, परंतु यह समाधान स्थायी

नहीं रहा। इन सभी राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक समस्याओं ने राठौड़ शासकों को यह सोचने पर विवश कर दिया कि उन्हें एक नई, अधिक सुरक्षित और व्यवस्थित राजधानी की आवश्यकता है। इस सोच का परिणाम था जोधपुर (मेहरानगढ़) की स्थापना। यहाँ पर उन्होंने मजबूत किला, विस्तृत जल प्रबंधन, सुरक्षित व्यापार मार्ग और संगठित प्रशासन विकसित किया।

अंततः, राठौड़ शासकों की प्रारंभिक राजधानियों कू पाली और मंडोर कू ने शासन को प्रारंभिक आधार और पहचान दी, लेकिन उनकी समस्याओं ने आगे चलकर जोधपुर जैसी सुदृढ़ राजधानी की नींव रखने में प्रेरक भूमिका निभाई। ये समस्याएँ ही मारवाड़ के भविष्य के विकास और स्थायित्व की दिशा तय करने वाली सिद्ध हुईं।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. मारवाड़ का इतिहास :- डॉ. गोरधनसिंह
2. राठौड़ वंश का इतिहास :- किशोर सिंह
3. ए हिस्ट्री ऑफ राजपुताना :- जेम्स टॉड (James Tod)
4. मारवाड़ : ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से :- डॉ. नारायणसिंह भाटी
5. राजस्थान का इतिहास :- कैलाशचंद्र भारद्वाज
6. राठौड़ वंश और मारवाड़ का गौरवशाली इतिहास :- श्याम सिंह राठौड़
7. जोधपुर राज्य का इतिहास :- लक्ष्मण सिंह
8. राजस्थान के राजवंश :- डॉ. शिवसिंह सरूप
9. राजस्थान की राजनीति और समाज :- प्रो. नथमल कासलीवाल
10. मारवाड़ के शूरवीर :- हरिसिंह भावसार
11. राजस्थान का राजनीतिक इतिहास :- डॉ. वी. एस. भाटी
12. राजस्थान की राजपूत वंशावलियाँ :- रघुनाथ सिंह
13. मारवाड़ राठौड़ों का इतिहास :- जयनारायण असवाल
14. जोधपुर : इतिहास और संस्कृति :- डॉ. ललितकुमार शर्मा
15. प्राचीन मारवाड़ के किले और गढ़ :- डॉ. मोहनलाल शर्मा

